कथा क्रम

अक्टूबर–दिसम्बर, 2025
मूल्य – ₹ 60

कथासाहित्य
कला
एवं
संस्कृति
की
त्रैमासिकी

आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान–2025

सम्मानित कथाकार–भालचंद्र जोशी

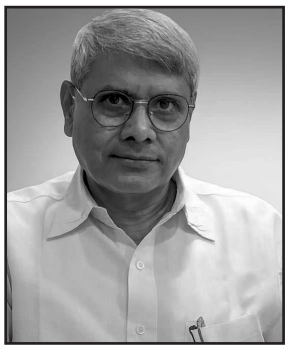

जन्म – 17 अप्रैल, 1956 जिला खरगोन म.प्र., पेशे से इंजीनियर।

कृतियां–

उपन्यास :

1. प्रार्थना में पहाड़
2. जस का फूल

कहानी संग्रह : 1. नींद से बाहर
2. चरसा
3. पहाड़ों पर रात
4. पालवा
5. जल में धूप
6. हत्या की पावन इच्छाएं
7. तितली धूप
8. कथा सप्तक
9. प्रतिनिधि कहानियां

आलोचना पुस्तकें :

1. यथार्थ की यात्रा
2. कहानी : स्वप्न, यथार्थ और संवेदना
3. नामवर सिंह : आलोचना की सार्थकता

संपादन : 1. लघु पत्रिका 'यथार्थ' का संपादन
2. कथादेश का नवलेखन अंक तथा हरिशंकर परसाई विशेषांक
3. पाखी का प्रेम विशेषांक
4. पुस्तकों का संपादन– प्रेम का घर–प्रेम की यात्रा, ग्लोबल गांव में स्त्री का घर, सूचना सभ्यता के स्वप्नपाश, आजादी का पर्यावरण और साहित्य का संघर्ष भाग 1 व 2

पुरस्कार / सम्मान

- मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन का वागीश्वरी पुरस्कार
- पाखी का वर्ष 2012 का शब्द साधक जनप्रिय लेखक सम्मान
- मध्य प्रदेश अभिनव कला परिषद का अभिनव शब्द शिल्पी सम्मान
- 2013 का स्पंदन कृति सम्मान
- 2014 में शैलेश मटियानी सम्मान
- कथेतर गद्य के लिए शमशेर सम्मान
- आलोचना पुस्तक पर 2024 का रामस्वरूप चतुर्वेदी आलोचना सम्मान
- आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान 2025

संपर्क– 603,(ग्राउंड फ्लोर), पॉकेट सी, सरिता विहार, नई दिल्ली–110076
दूरभाष– 8989432087
Email- joshibhalchandra@yahool.com

स्वर्गीय श्री आनन्द सागर

उत्तर प्रदेश के मेरठ नगर में 10 नवम्बर, 1930 को जन्मे श्री आनन्द सागर विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। मेधावी होने के साथ-साथ अल्पायु में ही वह कथालेखन से जुड़ गये। मात्र 14-15 वर्ष की उम्र में ही उनकी कुछ कहानियां स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुयीं। तब से उनके द्वारा निरन्तर लेखन किया गया। इस बीच अपने पिता के असामयिक निधन के बाद वह नौकरी की तलाश में मेरठ से रामपुर आ गये। वहीं कुछ समय पश्चात् 22 वर्ष की आयु में उन्होंने पहला उपन्यास लिखा।

हिन्दी में इतिहास को कथा में रूपांतरित करके विराट सत्य प्रस्तुत करने की परम्परा रही है। वृंदावनलाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन, अमृतलाल नागर, नरेन्द्र कोहली का लेखन इसका साक्ष्य है। श्री सागर ने अपनी रचनात्मकता को 'इतिहास के आख्यान' की इसी धारा से जोड़ा था। उन्होंने इतिहास के समय और सच्चाई को अभूतपूर्व कलात्मक कौशल से वर्तमान की संवेदना में समाहित किया है। उनका पहला ऐतिहासिक उपन्यास 'वाजिद अली शाह' नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से 1960 में प्रकाशित हुआ जो काफी चर्चित रहा। बाद में अन्य ऐतिहासिक उपन्यास 'बिठूर के नाना' (भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली), औरत, सितारा, इन्द्र धनुष व 'एकलिंग का दीवान' 1962 से 1968 के मध्य प्रकाशित हुये।

श्री आनन्द सागर ने कई कहानियां व लेख भी लिखे जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये। उनकी कई कहानियां पुरस्कृत भी हुई। उनकी ऐतिहासिक कहानी 'अजीज़न बी' विशेष रूप से चर्चित व कई भाषाओं में अनूदित हुई।

अड़तीस वर्ष से भी कम आयु में दिल का दौरा पड़ने से 25 फरवरी, 1968 को उनका निधन हो गया।

ISSN-2231-2161

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

वर्ष : 28 अंक : 106

अक्टूबर-दिसम्बर 2025

कहानियां

20 **गोपाल माथुर** : स्टिल लाइफ

26 **हरजेन्द्र चौधरी** : भगवां बाना

31 **सपना सिंह** : कुल्हाड़ी

37 **मीना गुप्ता** : उम्मीद का बढ़ता तिनका !

63 **राजा सिंह** : अपनी-अपनी दुनिया

68 **मार्टिन जॉन** : आख़िरी क़तार से पहली क़तार तक

76 **जूही** : मुलाकात

लघुकथाएं

19 **पवन शर्मा** : कागज की नाव

25 **बालकृष्ण गुप्ता 'गुरू'** : अनुसरण

57 **बालकृष्ण गुप्ता 'गुरू'** : सबसे होशियार

75 **छवि निगम** : अपनी-अपनी क्लास

कथा-नेपथ्य

02 **मधुरेश** : शरच्चन्द्र और उनका 'देवदास', पकड़ के भीतर का सच

लेख

41 **राम विनय शर्मा** : राष्ट्रीय आन्दोलन के मूल्य, व्यवस्था का विद्रूप और अमरकान्त की कहानियां

47 **डॉ. मनोज शर्मा** : अमरकांत की कहानियों में मध्यवर्गीय समाज की यथार्थ चित्रण

51 **कंवल भारती** : वर्ग-संघर्ष पर लाला हरदयाल का विमर्श

58 **राजेश राव** : दलित-स्त्री केन्द्रित कहानियों का सामाजिक-सरोकार

कविताएं

79 **कैलाश केशरी** : पहाड़ की गुहार

79 **शिरोमणि राम महतो** : कुंदा, गांव के पेड़

81 **श्रेयांश** : नैराश्य, भाषा खटखटा रही है

82 **डॉ. नवीन दवे मनावत** : पाश्चात्य सभ्यता और हम

83 **ट्विंकल खन्ना** : कचरा

83 **मनीष आवले चौगांवकर** : कविता

कथा-शोध

84 **बाबूलाल मीणा** : भारतीय रंगयात्रा में लोकनाट्य शैलियों का महत्व

87 **शिल्पी कुमारी** : मन्नू भंडारी की कहानियों में मध्यवर्गीय स्त्री-जीवन और यथार्थ बोध

समीक्षाएं

92 **राजेन्द्र सिंह गहलौत** : दलित विमर्श से राजनीति विमर्श तक का सफर तय करता उपन्यास (उपन्यास : राजकुमार सिंह)

94 **साधना अग्रवाल** : शहरी संघर्ष और चकाचौंध के बीच काठ के पुतले (कहानी संग्रह : प्रज्ञा)

96 **डॉ. रामकृष्ण यादव** : दलित-विमर्श को नया आयाम देता उपन्यास (उपन्यास : ललन प्रसाद सिंह)

99 **इला सिंह** : स्त्री मन की गुंजलकें के खोलती कहानियां (कहानी संग्रह : कल्पना मनोरमा)

101 **रवीन्द्र कात्यायन** : विभाजन, महिला नेतृत्व और मोहभंग (जीवनी : राम गोपाल सिंह वर्मा)

103 **अतुल्य खरे** : गणतंत्र के तोते (व्यंग्य संग्रह : धर्मपाल महेन्द्र जैन)

आवरण : **बंसीलाल परमार**

रेखाचित्र : **अजय कुमार सिन्हा**

संपादक

शैलेन्द्र सागर

संपादन परामर्श

रजनी गुप्त

सहयोग

मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक

राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :

डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006

दूरभाष : 09415243310

e-mail : kathakrama@gmail.com

e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 60 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-900 ₹, आजीवन 4000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक-400 ₹, त्रैवार्षिक-1100 ₹, आजीवन 5000 ₹

(kathakram SBI, Mahanagar Branch, Lucknow A/c 10059002392 IFSC-SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई.डी.सी.-देवा रोड, चिनहट, लखनऊ-226019

शरच्चन्द्र और उनका 'देवदास' पकड़ के भीतर का सच

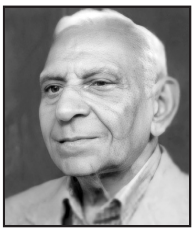

❑ मधुरेश

वरिष्ठ एवं प्रख्यात आलोचक
जन्म : 10 जनवरी, 1939 को बरेली उत्तर प्रदेश में।
40 से अधिक आलोचना पुस्तकों के रचयिता। प्रमुख हैं- 'हिंदी कहानी अस्मिता की तलाश, राहुल का कथाकर्म, हिंदी कहानी का विकास, क्रांतिकारी यशपाल, हिंदी उपन्यास का विकास, अमृतलाल नागर- व्यक्तित्व और रचना संसार, कहानीकार जैनेन्द्र कुमार : पुनर्विचार, मार्क्सवादी आलोचना और शिवदान सिंह चौहान, आलोचक का आकाश आदि।
सम्मान : समय माजरा सम्मान, गोकुल चंद्र शुक्ल आलोचना सम्मान, प्रमोद वर्मा आलोचना सम्मान सहित कई सम्मानों से समादृत।
संपर्क : 25, विष्णु विहार, अजबपुर कलां, देहरादून-248121
मो. 9319838309

शरच्चन्द्र की लोकप्रियता से सम्मोहित होकर जो कुछ हिंदी लेखक उनसे मिलने गए थे, उनमें इलाचन्द्र जोशी के अतिरिक्त अमृतलाल नागर भी थे। नागर जी को उन्होंने सुझाव दिया था- अपनी पकड़ के बाहर कभी न जाओ। 'पकड़ के अंदर का सच'से उनका तात्पर्य था कि अपने देखे-भाले और परिचित पात्रों को लेकर ही लिखा जाना चाहिए। स्वयं अपना उदाहरण सामने रखते हुए, वर्षों बाद वे अपनी शिष्या श्रीमती राधा रानी को लिखते हैं, 'मेरे साहित्य में जो कुछ तुमने पाया है, अगर जीवन में वह मुझे न मिला होता, तो क्या मैं ऐसा साहित्य लिख पाता?' (शरत-समग्र (सं.) विश्वनाथ मुखर्जी पृ. 5/745)

सन् 1917 में जब 'देवदास' प्रकाशित हुआ, शरच्चन्द्र की आयु पचास को पहुंच रही थी। 'देवदास' जिस सघन सांद्रता एवं निविड़ संवेदनशीलता की रचना है, यह अकारण नहीं है कि कुछ आलोचकों ने उसे 'सुदीर्घ गीति-काव्य' की संज्ञा दी है। लेखक की इस आयु की दृष्टि से वह सब विस्मित भले ही न करे, सच सचमुच नहीं है। वस्तुत: 'देवदास' काफी पहले लिखी गई रचना थी। अपनी रचनाओं के प्रकाशन के प्रति अपने स्वभावगत संकोच का उल्लेख शरच्चन्द्र ने अनेक जगह किया है। यही संकोच 'देवदास' के प्रकाशन के प्रसंग में भी बाधक था। कदाचित् अपने अनुभव से ही शरत् ने जहां-तहां लिखा है कि रस-परिपाक की दृष्टि से चालीस की आयु तक लेखक को अपनी रचना पूरी कर लेनी चाहिए। इसके बाद अपने ही अनुभव और विचार की प्रौढ़ता इसमें बाधक होती है। उसका अपना मन ही उसका सबसे बड़ा आलोचक हो जाता है।

वर्ष 1917 में जब देवदास का प्रकाशन हुआ, अपनी लोकप्रियता की दृष्टि से शरच्चन्द्र शिखर पर थे। जो शरच्चन्द्र अपने पिता की मृत्यु की सूचना पाकर मुज़फ्फरपुर से भागलपुर तक बाइस मील साईकिल चलाकर आए थे और उस साईकिल को बेचकर ही अपने पिता का श्राद्ध किया था, अपनी तेजी से बढ़ती लोकप्रियता के कारण वे ही शरच्चन्द्र अब बहुत बदल चुके थे। वर्ष 1922 में उनकी लोकप्रियता चरम पर थी। कुछ समय पहले, जो व्यक्ति सौ रुपये महीने की नौकरी के लिए परेशान था, उसकी मासिक आय बारह सौ रुपये थी।

रवीन्द्रनाथ को शरत् की यह लोकप्रियता आक्रान्त नहीं कर सकती थी। लेकिन दोनों के ही आस-पास जो लोग थे, वे ही दोनों को भड़काने की कोशिश करते थे। 'देवदास' की लोकप्रियता का आलम यह था कि सन् 1935 में प्रमथेश चंद्र बरुआ की फिल्म के साथ संजय लीला भंसाली की 'देवदास' तक हिंदी में उस पर सात फिल्में बन चुकी थीं। मूक फिल्मों के दौर में नीरेन्द्र मित्र ने 1928 में पहली बार 'देवदास' पर फिल्म बनाई थी।

विश्वास पाटील ने अपनी 'बड़ी किताबों पर बड़ी फिल्में' में लिखा है, 'देवदास शराबियों का प्रतिनिधि नहीं, वह तरुणाई का प्रतीक लगता है। यहां अनेक युवक युवतियों के लिए परेशान